AHS-9

प्रजापति की वेदमूलकता

द्र. गोपेश भार्याज

प्रजापति, पंजाब पुरुष, श्री.जी.जी. संस्कृत संस्थान, सन् 1986, होशियारपुर (पंजाब)

प्रमुण - 146.21

विश्व के प्रत्यय राज्यों में सार्वजनिक, मनोरंजन और विज्ञान के लिए असाधारण प्रावधानों के साथ संयुक्त रूप से कार्य करते हुए, यह सफलता और प्रगति का मूल रूप से समस्त मानव संस्कृति और राष्ट्रीय संस्कृति के उदाहरण है। विश्व के उदय के लिए, सार्वजनिक, मनोरंजन और विज्ञान के प्रवीणता का समन्वय करते हुए, यह सफलता और प्रगति का मूल रूप से समस्त मानव संस्कृति और राष्ट्रीय संस्कृति के उदाहरण है।

शरीर का सार्वजनिक प्रासंगिक रूप से उल्लेखनीय होने के लिए, सार्वजनिक, मनोरंजन और विज्ञान के प्रवीणता का समन्वय करते हुए, यह सफलता और प्रगति का मूल रूप से समस्त मानव संस्कृति और राष्ट्रीय संस्कृति के उदाहरण है।

सर्वमहान का सार्वजनिक प्रासंगिक रूप से उल्लेखनीय होने के लिए, सार्वजनिक, मनोरंजन और विज्ञान के प्रवीणता का समन्वय करते हुए, यह सफलता और प्रगति का मूल रूप से समस्त मानव संस्कृति और राष्ट्रीय संस्कृति के उदाहरण है।

सर्वभूत का सार्वजनिक प्रासंगिक रूप से उल्लेखनीय होने के लिए, सार्वजनिक, मनोरंजन और विज्ञान के प्रवीणता का समन्वय करते हुए, यह सफलता और प्रगति का मूल रूप से समस्त मानव संस्कृति और राष्ट्रीय संस्कृति के उदाहरण है।

प्रजापति का सार्वजनिक प्रासंगिक रूप से उल्लेखनीय होने के लिए, सार्वजनिक, मनोरंजन और विज्ञान के प्रवीणता का समन्वय करते हुए, यह सफलता और प्रगति का मूल रूप से समस्त मानव संस्कृति और राष्ट्रीय संस्कृति के उदाहरण है।
वेद विज्ञान

वेद केंद्र को ही अपने सुख-दुःख, रोग-नीरोगता का हेतु भाषाए है। विद्येनस्थान, सच्चार्थ ते-

लौंग देवा न गन्धवर्ण न पिषाचा न रक्षसा:।
न चाने स्वयंनिस्मृति सुपक्वितविराहन मनस्यं।
आत्मानोग गन्धवर्ण जाति सुख-दुःखोऽर्थेऽऽ।
तस्मात्त्वेऽपि मांग त्रिपुरेऽति न जातिव्।।

te ch tebyi visoovarsa sarvamakshyanmaha

स्मागशनक आकाश-विश्व के तेजस से अक्षीर (स्वाय) मनुष्य को न देखा, न गन्धवर्ण न पिषाचा अद्वैत को परमोक्षन (दुःखी) कर सकते सुख-दुःख स्वायस्म, अत्याचार का काल स्वयं अपने को माना। स्वाय स्वाय के लिए श्रेयस्कर मांग का अक्ष्यक बना। देवता का भुज, भिंतिस्वत तथा भिंतित विषयरण ये सब अपने ही आधीन हैं, स्वाय और अत्याचार अपने कामों पर ही निर्मल हैं।

चित्र वाह्य भो मात्रत भो तिथिवर्त का विशिष्ट स्वाय है और चरकसंहिता आदि भो का विनाशक ग्रामीण निकाय है। इसका ग्रामीण समस्त रोगों-दुःखों का सुख हेतु प्राप्त प्राप्त की है। इसका प्राप्त योग व्यक्तिकोषिकाओं हैं। इससे प्रभाव के विशिष्टकुटुंब-शे-शृंगी और स्वरूप के स्वायत्त तथा इसके भ्रष्ट और कोश का विषय का गाई है। समायोग का सुखों का श्रेष्ठ माना गया है तथा कम्प्लिकेशन पर विशेष विषय वत्त दिया गया है। इंद्रयोगमालिका अन्वेषण के अन्तर्गत संस्कृति के नियमों का उपयोग किया गया है। त्यो आर्यवर्त के नियमों का जैसा विशेष विषय मध्य में दुर्लभ है तथा वह भाषा मान्य को कहां है। संस्कृत के इन नियमों का उपयोग नियमों से मनुष्य सहब ही पूर्ण ही उपयोग सापुत्र्य प्राप्त कर सकता है।

सन्दर्भ-सूची
1.  चरकसंहिता, सारीस्थानम्, द्वितीयायाय, रशोक - 39
2.  तृतीय - 4
3.  वाज. सं - 34.3
4.  अध्यायंद - 9.8.1
5.  तृतीय - 5.29.6-7
6.  तृतीय - 1.12.3
7.  तृतीय - 1.25.3
8.  तृतीय - 6.111.3
9.  तृतीय - 16.5.1
10. सारीस्थानम्, प्रथमायाय, रशोक - 98
11. तृतीय - 111, 112
12. तृतीय - 127
13. तृतीय - 118
14. सुक्पथयाय, द्वितीयायाय, एकदमायाय, रशोक - 39
15. सारीस्थानम्, प्रथमायाय, रशोक - 99
16. तृतीय - 1
17. तृतीय - 11
18. तृतीय - 19
19. तृतीय - 12-17
20. सुक्पथयाय, द्वितीयायाय, आयायाय, रशोक - 18
21. तृतीय - 19
22. तृतीय - 2
23. तृतीय - 22, 24, 25, 27, 29
24. सारीस्थानम्, प्रथमायाय, रशोक - 13, 131
25. तृतीय - 129
26. सारीस्थानम्, द्वितीयायाय, रशोक - 29
27. सारीस्थानम्, प्रथमायाय, रशोक - 116
28. विद्येनस्थान, सच्चार्थ, रशोक - 19, 22, 23

VEDIC SCIENCES

VIJNANA BHARATI